Sixteenth Loksabha

an>

Title: Need to preserve country's regional languages and dialects facing extinction.

श्रीमती जयश्रीबेन पटेल (मेहसाणा): विशाल और प्राचीनतम संस्कृति वाले भारत में भाषाओं और उनसे जुड़ी संस्कृतियों का खजाना है। लेकिन हाईटेक युग में आने के बाद भारत में 42 भाषाएं व बोलियां संकट में हैं। संकटग्रस्त इन भाषाओं को बोलने वाले कुछ हजार लोग ही हैं।

गृह मंत्रालय के अधिकारी के अनुसार इन 42 भाषाओं में से कुछ विलुप्त भाषाएं प्राय भी हैं। संयुक्त राष्ट्र ने भी ऐसी 42 भारतीय भाषाओं या बोलियों की सूची तैयार की है। वह सभी भाषाएं खतरे में हैं और धीरे-धीरे विलुप्त होने की ओर बढ़ रही है। संकटग्रस्त भाषाओं में 11 अंडमान ऑर निकोबर द्वीप समूह की हैं। इन भाषाओं के नामःग्रेट अंडमानीज, जरावा, लामोंगजी,तुरो, मियोत, ओंगे, पु. सनेन्यो, सेंतिलीज, शोम्पेन और तकाहनयिलांग हैं। मणिपुर की संकटग्रस्त भाषाएं एमोल, अक्का, कोइरेन, लामगैंग, पुरूम और तराओ हैं। हिमाचल प्रदेश की चार भाषाएं -बंधाती, हुंदरी, पंगवाली और सिरमौदी भी खतरे में हैं। अन्य संकटग्रस्त भाषाओं में ओडिशा की मंडा, परजी और पेंगो हैं। कर्नाटक की कोरागा और कुरूबा, तमिलनाडु की कोटा और टोडा विलुप्त प्राय है। असम की नोरा और ताई रोग भाषा भी खतरे में हैं। उत्तराखंड की बंगानी, झारखंड की बिरहोर, महाराष्ट्र की निहाली, मेघालय की रूगा और पश्चिम बंगाल की टोटो भी विलुप्त होने की कगार पर पहुंच रही है। अधिकारिक सूत्रों के अनुसार मैसूर स्थित भारतीय भाषाओं के केंद्रीय संस्थान देश की खतरे में पड़ी भाषाओं के संरक्षण और अस्तित्व को बचाने के लिए उपाय कर रहा है। लेकिन आज हाइटेक युग में इन भाषाओं के विलुप्त होने का खतरा बढ़ता ही जा रहा है। अतः मेरा सरकार से अनुरोध है कि इन भारतीय भाषाओं को विलुप्त होने से बचाया जाए तथा इन भाषाओं को विलुप्त होने से रोकने के लिए कारगर कदम उठाए जाएं।